अध्याय नं 6

धूमिल के काव्य में व्यंगविधान -

समकालीन साहित्य की पहचान व्यंगात्मक भंगिमा से होती हैं। आधुनिक जीवन में जितनी विसंगतियां, विकृतियां, जटिलताओंने जो घर किया है उसी कारण जीवन कृत्रिम एवं असहय बन गया है। साहित्यकार जिस समाज में रहता है उसी भाव से विचार संस्कार ग्रहण करता हैं।

समकालीन साहित्यकार जीवन की विसंगतियो विडंबनाओ तथा वक्रोक्ति कटूक्ति आक्षेप आदि अभिव्यक्त करते हैं वे मूलतः व्यंग्य के ही सहायक है।

आधुनिक व्यवस्था को देखा जाय तो वह क्रूर शोषक तथा दूहरे चरित्रवाली मालुम होती हैं। सामाजिक आर्थिक स्थितियां दिन - ब - दिन अत्यंत भयंकर हो जाती है। व्यंग्यकार इसी परिवेश से टकराता हैं और अपने साहित्य के माध्यम से जन जागृति करने का प्रयास करता हैं।

सुदामा पांडे धूमिल की कविता का मूलस्वर व्यंग्यात्मक ही है। उनकी कविता में उबलता हुआ आवेश व्यंग्य का रुप धारण करता हैं। धूमिल के इस व्यंग्य की प्रकृतिपर विचार करने से पहले पूर्ण व्यंग्य की परिकल्पना क्या है। इस पर विचार करना बहुत जरुरी है।

प्राचीन संस्कृत आचार्ययोंने वाचक, लक्षक, तथा व्यंजक जैसे शब्दों की कल्पना की थी और उन्हीं के अनुसार वाच्यार्थ, लक्षार्थ तथा व्यंग्यार्थ की उपस्थिति को स्विकार किया था। शब्दों की अर्थो का ज्ञान करनेवाली अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, शक्तियों को क्रमशः वाचक, लक्षक, तथा व्यंजक शब्दों से जोडा था।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में 'व्यंग्य' शब्द प्रतीयमान या ध्वनित अर्थ के पर्यायवाची रुप में स्विकार किया गया था कुछ विद्वान ऐसे है जो व्यंग्य की अपेक्षा 'व्यंग्य' शब्द को अधिक समीचीन मानते हैं। क्योंकि उनके विचार से ऐसा करने से संस्कृत काव्यशास्त्र के 'व्यंग्य' शब्द में जो व्यंजना परख व्यंग्यार्थ निहित हैं, उससे मुक्ति मिल जाति हैं। परंतु संस्कृत में तो 'व्यंग्य' शब्द ' वि + अंग ' अर्थात विकलांग, अंगहीन अथवा रोगग्रस्त के अर्थ में प्रयुक्त होता हैं। उपर्युक्त अर्थ में प्रचलित व्यंग्य से बिलकुल मेल नहीं खाते।

सामान्य बोलाचाल में कटाक्ष, ताना, उपालंभ अथवा चुटकियां लेने को ही व्यंग्य माना जाता हैं और यही अर्थ व्यंग्य शब्द के लिए रुढ हो गया।

अंग्रेजी में व्यंग्य के लिए 'आयरन' तथा 'सैटायर' शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। आयरनी अथवा विडंबना जब परिस्थितियोंकी विसंगतियों से गुजरती हैं तो परिस्थितिगत विडंबना कहलाती हैं। और जब वह शाब्दीक कौशल्य का रुप धारण करती हैं तो उसे मौखिक विडंबना या वक्रोक्ति कहा जाता हैं।

हिंदी में व्यंग्य शब्द मूलतः अंग्रेजी के सैटायर शब्द का पर्यायवाची हैं। जब हम साहित्य में व्यंग्य की बात करते हैं तो हम सैटायर के अर्थ में ही इस शब्द को लेते हैं।

सैटायर शब्द का शाब्दीक अर्थ है भरपूर या पंचमेल खिचडी। होरेसने व्दितीय शताब्दी के कवि लुसिलियस को प्रथम व्यंग्य कवि माना था।

व्यंग्य का विषय कोई भी हो सकता हैं। जैसे - व्यक्ति या समाज। व्यक्ति के दुर्गणों, मूर्खताओं, दुर्बलताओं, दुराचारों, शाररीक तथा मानसिक विकृतियोंपर भी व्यंग्य किया जा सकता हैं और समाज में व्याप्त कुरीतियों अंधविश्वासों आर्थिक विषमताओं तथा राजनैतिक भ्रष्ट्राचार को भी व्यंग्य का विषय बनाया जा सकता हैं।

व्यंग्य की परिभाषाएं -

1. डॉ. जॉनसन के अनुसार :-

   व्यंग्य एक ऐसी रचना है जिसमें मूर्खता अथवा दुष्टता की आलोचना की जा सकती हैं।

2. ड्रायडन के अनुसार :-

   व्यंग्य का वास्तविक लक्ष्य पापों का प्रक्षालन है।

3. स्विप्ट के अनुसार :-

   स्विप्ट के अनुसार व्यंग्य के ऐसा दपर्ण है जिसमें हर एक को अपने सिवा सबका चेहरा नजर आता है। जिसके परिणाम स्वरुप व्यंग्य कम कष्टकर लगता है और इसका प्रर्याप्त स्वागत होता हैं।

4. बर्नाड शॉ के अनुसार :-

   'विश्व की मुक्ति उन लोगोंपर निर्भर करती हैं जो कि बुराई को हंसी में नहीं लेगें और जिनकी हंसी मूर्खता को प्रोत्साहित करने के बजाय उसे नष्ट करके रख देगी।'

5. मेरिडिथ :-

   व्यंग्य को दंभपूर्ण अहंवादी आत्मरक्षात्मक भावुकतापूर्ण एवं क्रूर लेखन मानते हैं।

6. ए–निकोल :–

व्यंग्य को आक्रामक नैतिक चेतना से रहित एवं निर्दय घोषित करते हैं जो कि, युग की रीति–निती पर निर्मम प्रहार करता हैं।

व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक रचना मानी गयी है जो कि, व्यक्तिगत दुर्गुणों, मुर्खताओं, दुराचरों, अथवा दुर्बलताओं की निंदा करने के लिए हास्य, उपहास, विद्रूप या अन्य किसी ऐसे ही माध्यम का उपयोग किया जाता हैं और ऐसा करने के पीछे कभी–कभी सुधार की इच्छा भी रहती हैं। दुर्गुणों तथा मुर्खताओं निंदा करनेवाली तीक्ष्ण कटाक्ष को भी व्यंग्य की संज्ञा दी जाती हैं। ३३

उपर्युक्त परिभाषा देखने के बाद व्यंग्य की निम्नलिखीत विशेतोओं को स्पष्ट किया जा सकता हैं।

1. व्यंग्य साहित्यिक रचना है।
2. व्यंग्य का लक्ष्य व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकृतियां होती हैं।
3. व्यंग्यकार प्राय: सुधार कामना से व्यंग्य लिखता हैं।
4. व्यंग्यकार निंदा तीक्ष्ण वाग्वैदग्ध्य तथा कटाक्ष या वक्रोक्ति को साधन के रुप में प्रयोग करता हैं। ३५

एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार –

"साहित्यिक संदर्भ में व्यंग्य की परिभाषा यह हो सकती हैं। उपहासास्पद अथवा असंगत वस्तुओं से उत्प्रेरित विनोद या घृणा के भाव की समुचित शब्दों में अभिव्यक्ति। इस अभिव्यक्ति में परिहास साफ झलकता हो और ऊक्ति को साहित्यिक रुप दिया गया हो।

इस परिभाषा में व्यंग्य के लिए साहित्यिकता एवं परिहास को अनिवार्य गुण माना गया हो। व्यंग्य में विनोद की अपेक्षा घृणा या क्षोभ ही स्थायी रुप से विद्यमान रहते हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र में व्यंग्य की गणना हास्यरस के अंतर्गत की गई है इसलिए व्यंग्य में हास्य की अनिवार्य उपस्थिति स्वीकार कर ली गई है। ३८

रामकुमार वर्मा के अनुसार :–

"व्यंग्य का लक्ष्य हास्य उत्पन्न करना रहता है और व्यंग्यकार यह कार्य वस्तुस्थिति के विकृति चित्रणद्वारा संपन्न करता हैं।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी :–

व्यंग्य वह है जहां कहनेवला अधरोष्ठों से हंस रहा है और सुननेवाला तिलमिला उठा हो फिर भी

कहनेवालों को जबाब देना स्वयं को और अधिक उपहास्यपद बना लेना हो जाता हैं।

उपेंद्रनाथ अश्क :-

व्यंग्य जब झूठ का पर्दाफाश करता है तो उसमें बेपनाह काट जाती हैं। लेकिन जब वह सचपर पर्दा डालने की कोशिश करता हैं तो बुरी तरह घायल हो जाता हैं। 35

अवध नारायण मुद्‌गल :-

व्यंग्यकार विकृतियों की सृष्टि नहीं करता। अपिंतु सृष्टि की विकृतियों को उजागर करके उनके सुधार की भूमिका तैयार करता हैं। एक अच्छे व्यंग्य में धार, तीखापन तो होता हैं लेकिन उसके पीछे व्यंग्यकार की सृजनशील भावना ही रहती हैं।

व्यंग्य का कोई न कोई शिकार जरुर होता हैं क्योंकि व्यंग्य आलोचना करता हैं। व्यंग्यकार के लिए यह आवश्यक है कि, वह अपने पाठकोंको अपनी रचना की अपयोगिता एवं आवश्यकता के विषय में आशस्त करें। व्यंग्यकार परिवेश में व्याप्त विसंगतियोंपर उंगली रखकर व्यंग्य की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित कर सकता हैं।

व्यंग्यकार भले ही अस्वाभाविक रुप से संवेदनशील हो, निराश एकाकी हो परंतु उसकी सफलता तभी संभव है यदि वह अनासक्त संकलित तर्कसंगत होने के साथ-साथ यह दिखा सके की वह जैसा दिखता है उससे अच्छी प्रकृति हैं। एक अच्छा व्यंग्यकार अपनी रचनाओंके माध्यम से अन्य कलाकारों की तरह पाठकोंको न केवल कलात्मक परितोष देने में समक्ष होता है बल्कि वह उनका ज्ञान वर्धन भी करता हैं

कुछ विद्वान व्यंग्य लेखन को शुध्द सौंदर्य शास्त्रीय दृष्टि से परखते हैं। व्यंग्य लेखक कलात्मक परितोष के लिए तथा स्वातः सुखाय ही व्यंग्य साहित्य रचना है ऐसा मानते हैं। आशावादी व्यंग्यकार जहाँपर लोगों की कमजोरियाँ, विकृतियाँ, विचिशता, तथा चालाकियों के प्रति सहिष्णु होता हैं और उनके सुधरने की आशा करता हैं। तो दूसरी ओर निराशावादी व्यंग्यकार इन सकबे प्रति निर्मम कठोर एवं उत्तेजित होता हैं।

जब व्यंग्यकार नितांत विनाश वृत्ति से ग्रस्त हो जाता हैं तो उसके काव्य का स्वर कटू हो जाता हैं। सामान्यतः व्यंग्यकार समाज में परिवर्तन चाहता हैं। उनका कहना है व्यंग्य यदि निश्चित वस्तुओं और व्यक्तिओंपर हो तो उसका प्रभाव अधिक होता हैं। अस्पष्ट व्यंग्य कितना ही तीक्ष्ण क्यों न हो वह हवा में घूंसे मारने की तरह बेकार हो जाता हैं।

व्यंग्य हास्य, विस्मय और विनोद से पैदा होता हैं। साहित्यकार अपने जीवन की विफलताओं

से बौखलाकर आक्रामक व्यंग्य लिख सकता हैं। जहांपर व्यक्तिगत कारण महत्वपूर्ण नहीं होते। वहांपर सामाजिक विसंगतियों, अर्थिक विषमताओं, राजनैतिक भ्रष्टाचार देखकर साहित्यकार व्यंग्य लेखन की ओर अग्रसर हो जाता हैं।

इस स्थिति में ही व्यंग्य लेखक की सामाजिक प्रतिबध्दता स्पष्ट हो जाती हैं। जीवन के किसी क्षेत्र में विसंगतियों एवं विडंबनाओं को देखा जा सकता हैं। जो कि, व्यंग्य के मुख्याधार होते हैं।

व्यंग्यकार में कुछ गुणों को होना आवश्यक है। उसमें सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति होनी चाहिए। गहन संवेदना का होना आवश्यक है। सामाजिक दायित्वबोध तथा भाषापर अप्रतिम अधिकार होना चाहिए। अच्छा व्यंग्यकार निश्चय ही जनमन का अच्छा पारखी भी होना चाहिए। हास्य परिहास, कटुक्ति, विडंबना तथा वक्रोक्ति के माध्यम से व्यंग्य की सृष्टि करता हैं।

व्यंग्य को विद्वानोंने 'गाली देने की ललित कला' भी कहा है। व्यंग्य की भाषा आक्रामक औपचारिक एवं भदेस भी हो सकती हैं। व्यंग्य की भाषा सरल, स्पष्ट एवं सीधी होनी चाहिए। इसलिए इसमें बोलचाल के शब्द, दैनिक प्रयोग के मुंहावरे, उक्तियां तो रहती हैं।

सुदामा पांडे धूमिल की कविता में व्यंग्य का प्रेरणा स्तोत्र कहाँपर है, इसपर विचार करना आवश्यक है। जैसा कि धूमिल की संक्षिप्त जीवनी से स्पष्ट है उसे सदा ही अभावों से लडना पडा। धूमिल अपने को कितना निराश तथा कुंठित पाते थे यह निम्न पंक्तियों में स्पष्ट है।

"मेरे हाथ काले है
मेरी आंखों में जाले है
मेरी जुबान चुप है
होठोंपर ताले है
घुटनों में जाडा है
मेरा जीवन लार टपकाती हुई नेकर का नाडा है
मुझे दर्द ने पछाडा है।" (1)

धूमिल कहीं न कहीं आम आदमी की तरह कुंठित अशक्त और टुटा हुआ अनुभव करते थे। "पटकथा" में वह अपने आपको 'घरबारी इन्सान' एवं डरा हुआ हिंदू भी बताता हैं। कवि अपने चारों ओर विकृतियों और विसंगतियों की भरमार देखकर घबरा जाता है और लिखता हैं -

"मेरे गांव में

वह आलस्य वहीं ऊब
वही कलह वही तटस्थता
हर जगह और हररोज
और मैं कुछ नहीं कर सकता
मैं कुछ नहीं कर सकता।" (2)

धूमिल का व्यंग्य केवल शाब्दिक नहीं है, और न ही उसकी कविता में व्यंग्य कुछ रुपकों, बिंबों अथवा उक्तियों का मोहताज है। जैसे तितली के पंखों में पटाखा बांधकर भाषा के हलके में गुल खिलाने से इन्कार करनेवाला कवि धूमिल कविता के द्वारा जन-जीवन में हस्तक्षेप करने की बात करता हैं और अपने आप से पूछता है कविता क्या है?

"कविता
शब्दों की अदालत में
मुजरिम के कटघरे में खडे बेकसूर आदमी का
हल्फनामा है।" (3)

धूमिल के काव्य में व्यंग्य की मूल प्रेरणा उसके सामाजिक दायित्वबोध तथा सामाजिक प्रतिबध्दता में ढूंढी जानी चाहिए।

धूमिल की कविता में राजनीतिक व्यवस्था तथा राजनेता व्यंग्य के प्रमुख लक्ष्य बने है। राजनीतिक व्यवस्था के प्रति धूमिल का व्यंग्य अत्यंत आक्रामक एवं कटु है। उसे ऐसा लगता है कि, भ्रष्टाचार ने ही कुर्सियों और टोपियां का रुप धारण कर लिया है। राष्ट्रनेता नितांत स्वार्थी, धूर्त, विलासी, बेशर्म और मूर्ख है क्योंकि -

"मैंने राष्ट्र के कर्णधारों को
सडकोंपर
किश्तियों की खोज में
भटकते देखा है। (4)

राजनेताओं के इस भ्रष्ट व्यवस्थापर व्यंग्य करते हुए धूमिल कटुक्तियों और अक्षेपों तक उतर आते हैं। गांव की अशिक्षा अकर्मण्यता, मुकदमेबाजी तथा शोषण को भी धूमिल नें व्यंग्यका विषय बनाया है। जिन ग्रामिणों के लिए अपना पूरा कंधा दे देना चाहता हैं, जिनके दुःख से दुःखी वह जवान बछडे की तरह रोग की पीडा जैसी पीडा सहता हैं। धूमिल की कविता में विसंगतियों और विडंबनात्मक स्थितियों के माध्यम से व्यंग्य को उभारा है। निर्धनता मनुष्य को किस प्रकार गिरा देती हैं। इसका

चित्रण धूमिल की 'मकान' नामक कविता हैं।

"जहाँ बूढे
खाना खा चुकने के बाद अंधे हो जाते हैं
जवान लडकियां अंधेरा पकड लेती हैं।" (5)

जवान लडकियों को गलत रास्तेपर देखकर भी चुप रहना पेट की मजबूरी ही बन जाती हैं। यहाँ वक्रोक्ति व्यंग्य है।

धूमिल की कविता में जो व्यंग्य है उसमें वास्तव में अलंकरण ही नहीं तो उसका प्राणतत्व भी है। युवक-युवतियां प्रेम, घृणा, हिंसा-अहिंसा, प्रजातंत्र, समाजवाद, शासक, शासित यह सभी व्यंग्य के शिकार होते हैं।

धूमिल की काव्य की यह विशेषता है कि, उसमें कहीं भी व्यक्तिगत वैमनस्य की झलक नहीं मिलती। अपने काव्य में व्यंग्य को उभरने के लिए विडंबना, विसंगति, आक्षेप, उपहास आदि का सहारा लेता हैं और वहीं उनका मुख्य हथियार है। विसंगति व्यंग्य का उदाहरण **निम्नलिखीत** हैं।

"सबसे अधिक हत्याएं
समन्वयवादियों ने की
दर्शनिकों ने
सबसे अधिक जेवर खरीदा।" (6)

समन्वयवादी सर्वाधिक असहिष्णु निकले। दार्शनिक सर्वाधिक मोहग्रस्त हैं। विसंगतियों के माध्यम से धूमिल अपने परिवेश में व्याप्त विकृतियोंपर निर्मम प्रहार करते हैं।

धूमिल की कविता में व्यंग्य का लक्ष्य जन-जागरण ही है। कविता को वैचारिक क्रांति के शस्त्र की तरह प्रयोग करना चाहते हैं। उनकी मूल्यचेतना अधिक प्रखर है इसलिए वह अपने परिवेश की विकृतियों के सहज पकड लेते हैं। वे जानते है कि, हम ऐसी विडंबनात्मक स्थितियों की उपज है। जिनमें जो जितना अधिक भ्रष्ट है उसकी रसोई में पकनेवाला चावल उतना ही अधिक महिन है या अच्छा है ऐसा प्रतीत हुए बीना नहीं रहता।

धूमिल अपनी कविताओं के माध्यम से पाठक को यह विश्वास दिलाने में समक्ष रहते हैं कि, वे जिन मुद्दों को उठा रहे है वे हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। धूमिल पूरी ईमानदारी के साथ उन मुद्दों को उठाते है और अपने विश्वास में लेते हैं। धूमिल की व्यंग्य कविताएं जीवन की विसंगतियोंपर आधारित विशुध्द, व्यंग्य कविताएं है।

व्यंग्य अच्छा हो या बुरा, सामान्य हो या विशिष्ट, सत्य हो या मिथ्या, हिंस्त्र हो या हास्यप्रद, गद्यात्मक हो या काव्यात्मक, मानव और उसके आचार के दुर्गुणों और मूर्खतांपर किया गया साहित्यिक आक्रमण एक व्यापक अर्थ में व्यंग्य के अंतर्गत रखा जा सकता हैं।

वक्रोक्ति व्यंग्य का महत्वपूर्ण उपकरण है। किंतु वक्रोक्ति की अपेक्षा व्यंग्य का धरातल अधिक व्यापक होता हैं। तथा उसमें गहरी मानवीय चिताएँ और व्यापक सामाजिक अभिप्राय निहीत रहते हैं।

धूमिल के शब्दों में आदमी की वीट और कविता में दो अलग-अलग चीजे है। आज के युग में व्यंग्य को रचनाकारों में जो मान्यता मिली है उसका कारण वर्तमान व्यवस्था का क्रूर मजाक और दोहरा चरित्र है। इन बातों से तंग आकर रचनाकार व्यंग्य की ओर उन्मुख हुए है।

आक्रामकता वह प्रमुख तत्व है जो व्यंग्य की दूसरी तरह के लेखन से अलग करता हैं। आक्रमकता का वास्तविक अर्थ है, ऐसा आचरण करना जिसका उद्‌देश आघात पहुंचाना हो। मनुष्य आक्रमक क्यों हो जाता है इस बारें में विद्वानों में एक मत नहीं है। वैसे तो नैतिक मूल्यों के -हास से क्षुब्ध होकर व्यक्ति आक्रमक हो उठता हैं। इसलिए व्यंग्य व्यक्ति की अहं भावना का विस्फोट मात्र नहीं। इस बारें में धूमिल उपेक्षा पाकर आक्रमक मुद्रा अपना लेते हैं।

लेकिन एक जरुरतमंद चेहरे के अलावा
वह धूमिल नहीं
एक डरा हुआ हिंदू है।" (7)

"हाँ-हाँ मैं कवि हूँ
कवि याने भाषामें
भदेस हूँ
इस कदर कायर हूँ
कि, उत्तर प्रदेश हूँ।"

और इस प्रकार 'क्रोध की आक्रमक मुद्रा में घायल पुरुषार्थ ऊब का चेहरा पहनकर रात के अंधेरे में सिर कटे हुए मुर्गे की तरह एक समूचा और सही वाक्य टूटकर बिखर जाता हैं।

धूमिल की कविता में निराशा, आत्महीनता और पराजय के भाव यत्र-तत्र मिलते हैं। अपने भीतर के अंधकार को परिचितों, अपरिचितों की स्थापित आस्था मूर्तियों को खिलौने की तरह तोडकर कमरे के बाहर फेंक देता हैं और उसमें तरंग आ जानेपर इन खंडित प्रतिभाओं को जोडकर वह अपने

शिशु सृजन को नया रुप देने लगता हैं।

धूमिल का कवि हृदय अपनी अकलाहट के पश्चात भी रात बीतने के इंतजार में एक नन्हें तीनके की भांति महसूस करता हैं। जैसे सजे हुए चेहरे पर मौसमों की अंगुलियां अलग-अलग लिपटी हुई है। फिर भी उन्हें विश्वास होता हैं कि,

"लोकतंत्र के
इस अमानवीय संकट के समय
कविताओं के जरिए
मैं भारतीय
वामपंथ के चरित्र को
भ्रष्ट होने से बचा सकूंगा।" (8)

वास्तव में धूमिल अपनी आस-पास की स्थितियों, विकृति और विसंगतियों से इतने त्रस्त थे कि, अपने भूगोल का हिसाब भूलकर अपने हारे हुए हिस्से की खोज कर रहे है। वैसे तो उन्हें सारी दुनिया पर क्रोध आता हैं और अपने आपको कोसते रहते हैं। एक आदमी डायरी के अलग पन्नोंपर बैठकर जाता हैं और देखता हैं,

"यह उस आदमी का भविष्य जो अचानक
टूटते-टूटते इस तरह तन गया है
की कल तक जो मवेशीखाना था उसके लिए
आज पंचायत भवन बन गया है।" (9)

कवि ने केवल व्यवस्था और सत्ताधारियों को अपने व्यंग्य का विषय नहीं बनाया है। उन्होंने जहाँ कहीं भी दोष देखा उसपर कसकर प्रहार किया। इसलिए जिंदगी भर मौत से जूझने का साहस धूनिल के साथ रहा। उसकी आक्रमकता में जहाँ एक लाचारी है वहीं दूसरी भविष्य की गूंज ज्यादा देर तक रहनेवाली है।

धूमिल के भीतर जनता के प्रति अपार वेदना थी। उसकी हर परेशानी से धूमिल परिचित थे। कुंठा, रुढिवादी, भावनाओं के खिलाफ बार-बार प्रहार करते थे। उन्हें जागरुक बनाने की कोशिश करते हैं। धूमिल उन कारणों का पर्दाफाश करते थे जिन्होंने उसका जीवन जीर्ण सा कर दिया।

धूमिल के व्यंग्य का आयाम अध्यापक, नेता, युवक, युवतियां, शहर, देहाती, लोगों से होकर संसद के भीतर की राजनीति तक फैला हुआ बहुत व्यापक है। उनका कहना है -

"नेताएँ झूठे आश्वासन देते हैं, नारेबाजी करते हैं, चुनाव लडते हैं, परंतु समाज की ओर उनका ध्यान नहीं जाता। सिर्फ अपना स्वार्थ देखते हैं। यह सब पक्ष धूमिल के व्यंग्य के शिकार हुए बिना नहीं रहें। धूमिल की "मोचीराम" कविता में इसका चित्रण देखने को मिलता हैं।

"ने कोई छोटा है
न कोई बडा है
हर आदमी एक जोडी जूता हैं
जो मेरे सामने सामने
मरम्मत के लिए खडा है।" 10

जनता, जनतंत्र, नेतापर धूमिल ने गहरा प्रहार किया है। चुनाव के समय होनेवाली गडबडियां, नेताओं के झूठे प्रलोभी बयानों, आश्वासनों की खिल्ली उडाकर उनके चरित्रिक व्यवहार पर व्यंग्य किया है। जैसे -

हाँ यह सही है कि, इन दिनों
मंत्री जब प्रजा के सामने आता हैं
कुछ ज्यादा मुस्कराता हैं
नए-नए वादे करता हैं।" (11)

इस देश की भोली-भाली जनता अपना किमती वोट देकर उन्हें मंत्रीपद की कुर्सीपर विराजमान करती हैं। जब यह मंत्री किये गये वादोंपर ध्यान नहीं देता सिर्फ अपना स्वार्थ देखता है तो जनता को यह देखकर बडा दुख होता हैं। और उनके खाली हाथ में सिर्फ यह बात रह जाती हैं वह है अगले चुनाव की।

"हर तरफ धुआँ है
हर तरफ कुहासा है
जो दांतों और दलदलों का दलाल है
वहीं देशभक्त हैं।" (12)

धूमिल कहते हैं, समाजवाद उनकी जुबान पर अपनी सुरक्षा का एक मुहावरा है। देश, प्रेम, बेकारी की फटी जेब से खिसककर बीते हुए कल में गिर पडता हैं।

हम देखते हैं कि, धूमिल की कविता में मानवीय दुर्बलताएं और सामाजिक विद्रूपताएं उनके व्यंग्य के प्रमुख विषय रहें जो चीजें सामान्य लोगों की निगाह से छूट जाती हैं व्यंग्यकार की दृष्टि सबसे

पहले उन्हींपर जाती हैं। वस्तुतः व्यंग्य आँख में अंगुली डालकर वास्तविकता को दर्शाया है। असंगति और अनौचित्य का वर्णनात्मक निरुपण है व्यंग्य।

व्यंग्यकार का क्षोभ जितना तीव्र होगा उसकी वाणी का दंश उतना ही तीखा और नीरस होगा। व्यक्ति मूल्यहीन परिवेश में सांस ले रहा है। जीवन मूल्यों को इसी संकट को व्यक्त करते हुए धूमिल लिखते हैं। -

"आदतों और विज्ञापनों से दबे हुए आदमी का
सबसे अमूल्य क्षण संदेहों में
तुलता हैं
हर ईमान का एक चोर दरवाजा होता हैं
जो संडास की बगल में खुलता हैं।" (13)

ऐसी सामाजिक स्थिति में किसी भी तरह का दुर्व्यहार कल्पनातीत नहीं हो सकता। व्यवहार की कोई असंगति नहीं हो सकती। शहरी जीवन की असंगतियोंपर किये गये कटाक्ष इसप्रकार है। -

"पूरी शराब पीकर मैंने इस बोतल को
शौचालय में डाल दिया है
जिसपर लिखा है
"FOR DEFENCE SERVICES ONLY"
यही मेरी जिंदगी का लब्बोलुबाब है।" (14)

धूमिल के सशक्त व्यंग्य की सर्वोपरि विशेषता यह है कि, उसमें गहन सच्चाई है। निर्विवाद यथार्थ होता है वस्तुतः किसी भी युग में अनावृत्त सत्य एक व्यंग्य के रुप में प्रकट होता हैं।

धूमिल की कविता में कुछ नर्म व्यंग्य भी है, चाहो तो उसे हास्य विनोद मानकर चल सकता हैं।

"पिकनिक से लौटी हुई लडकियां
प्रेमगीतों के गरारे करती हैं
सबसे अच्छे मस्तिष्क
आराम कुर्सीपर
चित्त पडे है।" (15)

इसतरह के चुटीले व्यंग्य भी धूमिल की कवितामें मिल जाते हैं। तीखे-तीखे व्यंग्य से लेकर चुटकियां लेनेवाले व्यंग्य उनकी कविता में हैं। कवि धूमिल की कटुतम और कटुतर व्यंग्योक्तियों को

पढ़कर यदि हमें कभी भ्रमवश आनंद सुख भी हो जाय तो वह बेमानी होती हैं। व्यंग्य का हास्य भावना का एक साधारण सा सिध्दांत उक्त व्यंग्य के लिए उपयुक्त सामाजिक और राजनीतिक स्थितियां होती हैं।

व्यंग्य की दृष्टि से धूमिल के काव्य में हास्य-परिहास नहीं, विसंगतिजन्य व्यंग्य के रुप में वक्रोक्ति के चेहरों के नंगेपन हत्या से संबंधित विकृति व्यावसायिकता प्रपंच और बौखलाहट को शब्दबध्द किया गया है।

"नहीं अब वहां कोई अर्थ खोजना व्यर्थ है
पेशेवर भाषा कि तस्कर संकेतों
और बैलमुत्ती इबारतों में
अर्थ खोजना व्यर्थ है।" (16)

धूमिल का व्यंग्य मन गहाराईयों में बैठकर पाठक को झकझोर कर देता हैं। धूमिल की व्यंग्य की कविताएं जीवन की विसंगतियों पर आधारित विशुध्द व्यंग्य कविताएं है। धूमिल की "मोचीराम" कविता व्यंग्य की सर्वाधिक सफल कविता हैं। जब धूमिल कविता में व्यंग्य के साथ-साथ अभिव्यंजना शक्ति को ढूंढते हैं तो प्रतीकवाद और प्रभाववाद के रुप में उभरे दिखाई देते हैं।

हकिकत यह है कि, धूमिल की कविता किसी भी पक्ष में नहीं आती। क्योंकि वह किसी के साथ दूर तक नहीं चल पाती। वह बहुत ही तेज आगे दौडती हैं। बहुत ही आलोचक प्रतीकवाद और अभिव्यंजना को अलग-अलग दृश विधान के अंतर्गत मानते हैं। उसकी मान्यता है कि, प्रतीकवाद से अभिव्यंजना इस अर्थ में भिन्न है कि, प्रतीकवादी कवि वस्तुओं के भीतर धंसने की कोशिश करता हैं जब की अभिव्यंजनावादी दृश सौंदर्य ही यथेष्ट समझता हैं।

धूमिल की कविता बौध्दिक स्तरपर सक्रीय है उसमें अभिव्यंजना शक्ति हैं। व्यंग्य के साथ विद्रोह का प्रधान स्वर है उसका उद्देश जीवन ही नहीं अभिव्यक्ति हैं। कवि कहते हैं - चित्र बनाते समय चित्रकार की जो मनोदशा होती हैं वैसी ही मनोदशा कविता रचते समय कवि की होनी चाहिए। कविता बिंबों के व्यंग्यात्क प्रयोग में निराला और मुक्तिबोध के बाद धूमिल का ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

कहने की आवश्यकता नहीं की धूमिल काव्य व्यंग्य के जिन आयामों को लेकर प्रहारात्मकता के साथ आगे बढे है, निश्चय ही उसमें एक सार्थकता का बोध होता हैं। उसमें गांभीर्य भी है। वे नये रुप, नये विषय और नई सामाजिक समझ लेकर आये जिससे एक नया धरातल तैयार हुआ। मतलब यह

है कि, शब्दावली से लेकर कल्प की शकुंतला और नवीनता - इन सभी दृष्टियोंसे धूमिल की कविता, कविता का जगत दुनिया का विस्तार करती हैं। -

' एक रुआँसा लडका
मदर से वापस आता हैं
चारपाईपर
दायीं करवट लेता हुआ बाप
बेटे के कमीजपर गिरी हुई स्याही
देखकर
उसकी पढाई के बारें में निश्चित
हो जाता हैं।' (17)

उपर्युक्त उध्दरण में धूमिल के व्यंग्य की मृदुता, उग्रता, और व्यापकता समझने के लिए विवश करते हैं। वस्तुतः व्यंग्य एक बडी व्यापक भावना है। विनोद, हास्य, परिहास, उपहास, आदि नाना रुप दिखाई देते हैं। यह हमे केवल अपने जीवन की जटिलताओं से उपजे दुखों के प्रति सहायता नहीं करती - वरन् हमें प्रगति पथपर निरंतर आगे बढने की प्रेरणा देती हैं। तो दूसरी ओर इसी का व्यंग्य रुप हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक दोषों को समझने और उन्हें दूर करने में हमारी सहायता करता हैं।

संकट के समय व्यंग्य हमारी सहायता करता हैं। व्यंग्य का उद्‌देश भ्रम को तोडना और सच्चाई से साक्षात्कार करना ही होता हैं। हास्य, विनोद, और व्यंग्य में विशेष अंतर होता हैं। हास्य विनोद सुखद होता हैं व्यंग्य से सुख की अनुभूति नही होती। श्रेष्ठ व्यंग्य को पढकर कुछ अनुभव होता हैं तो वह है समाधान।

व्यंग्य के विचार में एक विशेष उल्लेखनीय बात हैं व्यंग्य करनेवाला स्वयं को कुछ अधिक चतुर समझता हैं। जिसे वह अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाता हैं। यदि वह उनके वास्तविक रुपों को जानने समझने योग्य चतुर हो तो काम चल सकता हैं। राजनीति और राजनेताओंपर व्यंग्य करना इसलिए सरल है कि, दोनों घोषणा जीवी होते हैं और व्यंग्यकार इसी वास्तविकता में पलता हैं।

' वहां बंजर मैदान
कंकालो की नुमाईश कर रहे थे।
गोदाम अनाज से भरे पडे थे और लोग
भूखों मर रहे थे।' (18)

व्यंग्यकार कोई भी हो कवि हो या नाटककार, कहानीकार हो या उपन्यासकार, अपने समय की व्यवस्थापर व्यंग्य करने का अधिकारी अवश्य होता हैं। परंतु उस व्यवस्था को बदलने की शक्ती उसमें नहीं हो सकती। जैसे – डॉक्टर बिमारी को पहचान कर इलाज कर सकता है किंतु ऐसा नहीं होता कि स्वयं डाक्टर दवाइयों का सेवन कर बीमार की बीमारी भगा नही सकता।

उसी प्रकार ही व्यंग्यकार और राजनेताओं के बीच चिकित्सक और बिमार का संबंध होता हैं। इसमें व्यंग्यकार स्वयं को हारा हुआ अनुभव करता हुआ भी स्वयं को व्यंग्य करने से विमुख नहीं कर सकता।

धूमिल की कविता में सबसे अधिक राजनीतिक व्यंग्य ही उभरा है। सामाजिक समस्याओंसे संबंधित व्यंग्य कभी चिरंजीवी नही हो सकता। व्यंग्यकार के मन में व्यंग्य पात्र के प्रति अनुदारता, संकीर्णता, अनास्था और प्रबल विरोध की भावना रहती हैं। वह यह सोचकर लिखता हैं कि, औरों को भी अपने विचार के साँचे में ढाल सकेगा। परंतु इसका यह विचार शायद ही सफल हो जाता हैं। धूमिल ने अपने व्यंग्य का लक्ष हर वस्तु को बनाया है। व्यक्ति के गुण–अवगुण, सामाजिक वर्ग याने जनता को भी उन्होंने व्यंग्य का पात्र माना है।

"हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक
फैला हुआ
जली हुई मिट्टी का ढेर है
जहां पर तिसरी गुबान का मतलब
नफरत हैं
साजिश है
अंधेर है
यह मेरा देश है।" ।9

समाजवार पर चली यहां की, अर्थिक नीतियों का प्रभाव शोषक – पूंजी – पतियोंके अपरिमित लाभ और निर्धनता ने अकल्पित शोषण में प्रकट हुआ है। आश्चर्य तो यह है कि, धूमिल के व्यंग्य को

इन चार पंक्तियोंने उजागर कर दिया है।

' मगर मैं जानता हूं कि मेरे देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकी हुई
उन बाल्टियों की तरह है जिसपर 'आग' लिखा है
और उनमें आग और पानी भरा हैं।' 20

जीवन मूल्यों का -हास होकर चरित्रिक पतन की गाडी रुकती है तो भी बडी बात होती हैं। परंतु उन मूल्यों को विकृत और विपरीत रुपों में प्रतिष्ठा बढी है। उससे भारी दुर्भाग्य किसी जाति का और क्या हो सकता हैं। ऐसे जीवन मूल्यों के संकट से भी धूमिल अच्छे परिचित थे इस मूल्यगत -हासपर कटु व्यंग्य किया।

मैंने अहिंसा को
एक सत्तारुढ शब्द का गला काटते हुए देखा है
मैंने ईमानदारी को अपनी चोर जेबें
भरते हुए देखा है
मैंने विवेक को
चापलुसों के तलवे चाटते देखा।' 21

जनता के दोषों को दिखाने में भी उसके वक्तव्यों में व्यंग्य का वही तीखापन है जो अवसरवादी राजनेताओं के हथकंडो के बारें या दोगले चरित्र के वर्णन के प्रसंग में दिखाई देता हैं।

' जनता क्या है
एक शब्द - सिर्फ एक शब्द
कुहरा और किचड और कांच से
बना हुआ
एक भेड है
जो दूसरों की ठंड के लिए
अपनी पीठपर
ऊन की फसल ढो रही है।' 22

शहरी समाज की सभ्यता की निर्ममता पर चोट करने के लिए धूमिल की निम्नलिखीत पंक्तियाँ

पाठकों को कठोर वास्तविकता के कारण चौंका देती हैं।

' शहर की समूची पशुता के खिलाफ
गलियों में नंगी घूमती हुई
पागल औरत के 'गभिन पेट' की तरह
सडक के पीछले हिस्से में
छाया रहेगा पीछा अंधकार।' 23

एक विक्षिप्त पागल औरत को अपनी पाशाविक वासना का शिकार बनाना शहर की सभ्यता का ही लक्षण हो सकता हैं। इस जीवन मूल्यहीन व्यवस्था का वर्णन धूमिल के जैस समर्थ कवि ही कर सकता हैं। निम्नलिखित शब्दों की सच्चाई अंधकरण को बांधनेवाली है।

' एक अजीब सी प्यार भरी गुर्राहट
जैसे कोई मादा भेडिया
अपने छौने को दूध पिला रही है और
साथ ही किसी मेमने का सिर चबा रही है।' 24

'शहर का व्याकरण' कविता चुनावों की राजनीतिपर करारा व्यंग्य किया है। चुनाव जितने के प्रत्याशी विदूषकों की तरह शोक करते हैं। चुनाओं में हमारी व्यवस्था के सारे दोष सामने आ जाते हैं। जैसे -

' शहर का व्याकरण ठीक करने के लिए
एक हल्लागडी
गश्त कर रही है
चुनाव के इश्तहार से निकलकर
एक आदमी सडकपर आ गया
आसमान में सन्नाटा छा गया
शाम के सात बजे
भाषा के चौथे पहर में
'मैं प्रभू हूँ' का चेहरा उतारकर
वह विदूषक
उस - शो - केस के सामने खडा है।' 25

लोग चुनावों की तडक - भडक और भीड में अपनी दुर्दशा को भूल जाते हैं। भारतीय प्रजातंत्र

में भी सच्चाई कहना खतरे से खाली नहीं। जीवित रहने के लिए जरुरी हो गया है कि, आदमी पालतु बने।

' सचमुच मजबूरी है
मगर जिंदा रहने के लिए
पालतू होना जरुरी है।' [25]

धूमिल के व्यंग्य की सर्वोपरि विशेषता यह है कि, उसमें गहन सच्चाई होती हैं। सत्य एक कटु व्यंग्य के रुप में प्रकट होता हैं। धूमिल अपने समय के जन-जीवन को ऐंसे विषयों को चुना है जो चिंताजनक समस्याओं को अपनी विकरालता में प्रस्तुत करते हैं। उसकी कविताओं में कुछ नर्म व्यंग्य चाहो तो उसे हास्य विनोद भी मात कर सकते हैं।

' तुम्हारी जेब में क्या है ? प्यार ?
उसे बाहर गली में फेंक दो
यह दूसरे का घर है
और शहर की जुबान में
तुम्हारी भाषा और उम्मीद के बीच
वे काठ का एक टुकडा रख देगें
या फिर एक प्याली गर्म चाय
पियो जी कबीजी माराज।' [29]

इसतरह के कई चुटीले व्यंग्य धूमिल की कविता में है। शहर की तुलना में गांव की जीवन मूल्यों में निष्ठा कुछ अधिक है। पारंपरिक मूल्यों को सुरक्षित रखने के प्रति **ग्रामिणों** का कुछ अधिक झुकाव होता हैं। परंतु देहाती लोगों के जीवन की एक कुरुप वास्तविकता भी होती हैं। जिसमें धूमिल जैसा कवि झांक सकता हैं।

किसी तरह की भयावह स्थिति प्रतिरोध करने के लिए ग्रामीण जनता एक मंचपर आ सकती हैं। उसमें संघठित होकर दु:स्थिती का सामना करने का अभाव होता हैं। वह हर संकट को नियति इच्छा जानकर झेल जाती हैं उसी पर व्यंग्य करते हुए कवि लिखते हैं।

' लोग बिलबिला रहे है (पेडो को नंगा करते हैं)
पते और छाल
खा रहें है

"मर रहे है दान
कर रहे है
जलसों--जलसों में भीड की पूरी ईमानदारी से
हिस्सा ले रहे है और
अकाल को सोहर की तरह गा रहे है
झुलसे हुए चेहरों पर कोई चेतावनी नहीं है।" 28

धूमिल ने अपनी कविता में देहाती जीवन पर बहुत कुछ लिखा है। परंतु उसको व्यंग्य के अंतर्गत विवेचित करना अनावश्यक विस्तार देना जैसा है। देहात और शहर के बीच होता है कस्बा-कस्बा देहाती और शहरी जीवन के अभिशापों को इकठ्ठे ढोता हैं। उसके जीवन में झांकते हुए धूमिल लिखते हैं:--

"मैंने अक्सर उन्हें
उन मकानों के बारें में बतलाया है
जिनकी खिडकी
गली झाँकते चेहरों के। बेवजह बदनाम।" 29

कवि का कहना है आधुनिक जीवन जटिल ही नहीं हुआ है, उसमें विसंगतियों की बाढ आई है। आदमी निरंतर कटघरा बनता चला है। उनकी सहज मुद्रा आक्रोश एवं व्यंग्यमयी बन गयी है।

एक व्यंग्यकार व्यक्तिगत दुर्बलताओं, मुर्खताओं, दुर्गुणों अथवा विकृतियों के व्यंग्य का निशाना बन सकता हैं। धूमिल के काव्य में शोषक वर्ग और सत्ताधारी वर्गपर तीखे व्यंग्य किये है। अध्यापक, साहित्यकार, नेता, युवक-युवतियां यह सब उनके व्यंग्य का शिकार बन गये है। धाूमिल का व्यंग्य अत्यंत पैना और व्यंग्य पात्र को भीतर तक चीर देनेवाला है। उसमें सच्चाई की धार होने से उसकी क्षमता और भी बढ जाती हैं।

धूमिल के व्यंग्य काव्य का लक्ष्य भ्रष्ट व्यवस्था है। सारी व्यवस्था आम आदमी के खिलाफ खडी है। चुनाव, प्रजातंत्र, आजादी, संसद, हरितक्रांति, सभी आम आदमी के खिलाफ है। इसीलिए धूमिल अपनी कविताओंके माध्यम से इनपर प्रहार करता हैं।

"उम्र के सत्ताईस साल
उसने भागते हुए जिये है
उसकी पेशाब पर चीटियां रेंगती है
उसके प्रेम-पत्रों की आंच में
उसकी प्रेमिकाएं रोटियां सेंकती हैं
अपनी अधुरी इच्छाओं में झुलसता हैं
वह एक संभावित तर्क है
वह अपने लिए काफी सतर्क है
और जब जवान औरतों को देखता हैं
उसके आँखों में कुत्ते भौंकते हैं।" ३०

अनास्था के हल्के से संकेत उभारता हुआ उसका व्यंग्य अपने ही देश के बारें में ये शब्द लिखकर चरम स्पर्श करता दिखाई देता हैं।

"मेरे सामने वहीं चिर परिचित अंधकार है
संशय की अनिश्चियग्रस्त टेढी मुद्राएँ है।
हर तरफ
शब्दवेधी सन्नाटा है
दरिद्र की व्यथा की तरह
उचाट और कूंथता हुआ घृणा में
डूबा हुआ सारा का सारा देश
पहले की ही तरह आज भी
मेरा कारागर है।" ३१

धूमिल की व्यंग्य कविताएँ जीवन की विसंगतियोंपर आधारित विशुध्द व्यंग्य कविताएँ हैं, जहाँ संभ्रातों की बारकियां उघाडनेवाला व्यंग्य है, वहीं जन साधारण की चुटकियां लेनेवाला भी व्यंग्य है।

"मोचीराम" कविता के बनिये बिसाती की मानसिकता पर व्यंग्य किया है। जो कि, 'हिटलर के **नाती** की तरह से खटवाता हैं और "नामा" देने के समय "नट" जाता हैं। यहाँपर ऐसे चरित्र के

प्रति घृणा भी होती हैं, उसपर हंसी भी आती है और ऐसा व्यवहार न करने का भाव भी जागता हैं। यहीं एक अच्छे व्यंग्य की पहचान है।

"एक जूता और है जिससे पैर को
नाँघकर एक आदमी निकलता हैं
न वह अक्लमन्द है
न वक्त का पाबन्द है
उसकी आँखो में लालच है
हाथों में घडी है
उसे कही नहीं जाना है
मगर चेहरे पर
बडी हडबडी है
वह कोई बनिया है
या बिसाती हैं
मगर रोब ऐसा कि हिटलर का नाती हैं।" ३२

धूमिल के काव्य में मूल प्रेरणा उसके सामाजिक दायित्वबोध, सामाजिक प्रतिबध्दता में ढूंढी जानी चाहिए। धूमिल किन्हीं व्यक्तिगत कुंठाओं अथवा कलागत आदर्श पूर्ति के लिए काव्य रचना की ओर प्रवृत्त नहीं होते। बल्कि विसंगतियों से उत्पन्न अवांधित स्थितियों का बोध कराने के लिए वे काव्य रचना करते थे।

********* 0 *********

अध्याय नं.6

1.	कल सुनना मुझे – धूमिल – पराजय बोध	पृष्ठ 70
2.	कल सुनना मुझे – धूमिल – गाँव में किर्तन	पृष्ठ 76
3.	संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई	पृष्ठ 85
4.	कल सुनना मुझे – धूमिल – एक कविता कुछ सूचनाएँ	पृष्ठ 29
5.	संसद से सडक तक – धूमिल – मकान	पृष्ठ 50
6.	कल सुनना मुझे – धूमिल – एक कविता कुछ सूचनाएँ	पृष्ठ 27
7.	संसद से सडक तक – धूमिल – कवि 1970	पृष्ठ 63, 65
8.	सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – रात्रि–भाषा	पृष्ठ 81
9.	संसद से सडक तक – धूमिल – प्रौढ शिक्षा	पृष्ठ 46
10.	संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम	पृष्ठ 37
11.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 124
12.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 106
13.	संसद से सडक तक – धूमिल – सच्ची बात	पृष्ठ 76, 77
14.	संसद से सडक तक – धूमिल – शहर श्याम और एक बूढा मैं	पृष्ठ 73
15.	कल सुनना मुझे – धूमिल – एक कविता कुछ सूचनाएँ	पृष्ठ 30
16.	संसद से सडक तक – धूमिल – कविता	पृष्ठ 8
17.	कल सुनना मुझे – धूमिल – गाँव में किर्तन	पृष्ठ 74
18.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 108
19.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 104
20.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 127
21.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 120
22.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 104
23.	संसद से सडक तक – धूमिल – जनतंत्र के सूर्योदय में	पृष्ठ 12
24.	संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा	पृष्ठ 112
25.	संसद से सडक तक – धूमिल – शहर का व्याकरण	पृष्ठ 56
26.	संसद से सडक तक – धूमिल – शहर का व्याकरण	पृष्ठ 57
27.	कल सुनना मुझे – धूमिल – दूसरे का घर	पृष्ठ 45

28. संसद से सडक तक – धूमिल – अकाल दर्शन — पृष्ठ 16
29. संसद से सडक तक – धूमिल – मकान — पृष्ठ 50
30. संसद से सडक तक – धूमिल – एक आदमी — पृष्ठ 54
31. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 128
32. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 39
33. विपक्ष का कवि धूमिल – राहुल — पृष्ठ 134
34. सुदामा पांडे धूमिल की कविता में यथार्थ बोध–डॉ. चमनलाल गुप्ता — पृष्ठ 124
35. सुदामा पांडे धूमिल की कविता में यथार्थ बोध–डॉ. चमनलाल गुप्ता — पृष्ठ 126
36. विपक्ष का कवि धूमिल – राहुल — पृष्ठ 135